POLITICAL SCIENCE Dep
B.A-III (Hons.), Paper V

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College,
Tajpur, Samastipur

संगठन का शास्त्रीय सिद्धान्त

संगठन के शास्त्रीय अथवा पारंपरिक दृष्टिकोण के अनुसार संगठन को संरचनात्मक व्यवस्था माना गया है। इसके अनुसार संगठन कार्य निष्पादन के लिए ढाँचा मात्र है जो संगठन के विभिन्न खण्डों में पाए जाने वाले सम्बंधों को प्रकट करता है। संगठन का अर्थ है किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक क्रियाओं का निर्धारण करना और उन्हें ऐसे वर्गों में क्रमबद्ध करना जोकि विभिन्न व्यक्तियों को सौंपे जा सकें। उर्विक के अनुसार "संगठन एक संरचनात्मक ढाँचा है जिसके द्वारा उद्यम को एकबद्ध किया जाता है और यह ऐसा संरचण है जिसमें व्यक्तिगत प्रयासों को समन्वित किया जाता है।"

विद्वानों द्वारा व्यवस्था प्राप्ति के उद्देश्य से योजना बनाने के कार्य और उसके आधार पर निर्मित ढाँचे को संगठन माना जाता है। इसमें मानव को या तो कोई स्थान प्रदान नहीं किया गया है या फिर गौण स्थान प्रदान किया गया है। उर्विक, लूथर गुलिक, मूने एवं रेले आदि शास्त्रीय दृष्टिकोण के विचारक हैं।